بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदनाहज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहुतआलाबिनसरिहिल अज़ीज़ **27.6.14**बैतुल फ़तूह, लंदन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दावे से पहले भी यह इलहाम हुआ कि, फिर अन्त तक कई बार हुआ कि ینصرک رجال نوحی الیھم من السماء अर्थात तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम इलहाम करेंगे। यह इलहाम बड़े वैभव के साथ विविध दशाओं एंव विभिन्न मार्गों से अब तक पूरा होता चला जा रहा है।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दावे से पहले भी यह इलहाम हुआ कि, फिर अन्त तक कई बार हुआ कि **ینصرک رجال نوحی الیھم من السماء** अर्थात तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम इलहाम करेंगे। और 1907 में उसके साथ यह भी इलहाम है कि **یاتون من کل فج عمیق** वे दूर दराज़ स्थानों से तेरे पास आएंगे। यह इलहाम बड़े वैभव के साथ विविध दशाओं एंव विभिन्न मार्गों से अब तक पूरा होता चला जा रहा है। विभिन्न लोग विभिन्न क्षेत्रों से आपके पास आते हैं अर्थात आपके जीवन में आपके पास आते रहे और फिर आपके बाद आपके द्वारा जारी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त में ख़ुलफ़ाए-ए-वक़्त के पास आते रहे और आ रहे हैं, जो सहायक बनते हैं। अल्लाह तआला न केवल उनके दिलों को इस ओर झुकाता है कि सहायक बनें बल्कि सहायता एंव सेवा तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने की तड़प एंव लगन उनके अन्दर पैदा हो जाती है और फिर अपने तन मन धन से इस काम में जुट जाते हैं और आपके सुलताने नसीर बन जाते हैं ख़ुलफ़ाए-ए-वक़्त के हाथ पाँव बन जाते हैं उनमें से ऐसे भी हैं जो क़ुरआनी आदेश **तफ़क़्क़ो फ़िद्दीन** के अनुसार ज्ञान हासिल करके अपने सहयोगियों को दीन का सन्देश पहुंचाते हैं और इसमें अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। दूर सूदूर से आए अनेक ऐसे जहां बीसवीं शताब्दी के छटे सातवें दशक तक पचार पसार तथा पत्राचार की ऐसी स्थिति थी कि छः छः महीने तक पत्र नहीं पहुंचते थे। अतः ऐसे लोगों का दीन सीखने के लिए सिलसिले के मर्कज़ में आना और पूर्ण विवेक के साथ दीन सीखना तथा अपने जीवन दीन के लिए वक़्फ़ कर देना और फिर पूर्ण आज्ञापालन के साथ इस समर्पण को निभाना और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए हर एक बलिदान के लिए तैय्यार हो जाना जहां यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का पमाण है वहीं आज तक ऐसे लागों की क़ुरबानी को अब तक जारी रखना ख़िलाफ़त अहमदिय्या की सच्चाई की भी दलील है और यह चीज़ इस बात को भी पमाणित करती है कि ऐसे लोग सईद वृत्ति के होते हैं और उनकी इस विशेषता के कारण ख़ुदा तआला की रहमत की दृष्टि उनपर पड़ती ह और उन्हें चुनकर फिर आकाश का तारा बना देती है।

इस समय मैं एक ऐसे ही सिलसिले के सेवक तथा सिलसिले के बलिदानी मुकर्रम अब्दुल वहाब आदम साहब का वर्णन करुंगा जो अफ़्रोक़ा के एक देश से उस समय सिलसिले के मर्कज़ में दीन की शिक्षा हासिल करने तथा खिलाफ़त का सुलताने नसीर बनने के लिए आए। यह पतिज्ञा लेकर आए कि अब मैं ने इस काम को अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ करना है, उस समय आए जब अभी रबवा आबाद हो रहा था तथा अफ़्रीक़ा में सम्पर्क भी महीनों के बाद होता था। यह हमारे प्यारे बज़ुर्ग भाई और ख़िलाफ़त पर जीवन की बलि देने वाले सिपाही ख़लीफ़-ए-वक़्त के इशारों पर चलने वाले, हर एक आदेश जो ख़लीफ़-ए-वक़्त की ओर से आए उसे पूर्ण विवेक से स्वीकार करने वाले, ख़लीफ़-ए-वक़्त के छोटे छोटे आदेश बल्कि इच्छाओं के लिए भी व्याकुल रहने वाले थे। मैं ने जब आठ साल से अधिक घाना में इनके साथ काम किया है उस समय भी ख़िलाफ़ के साथ सम्बंध में उन्हें ऐसा ही देखा जैसा कि मैं बयान कर चुका हूं तथा ख़िलाफ़त के बाद मेरे साथ भी आज्ञापालन एंव निष्ठा में उन्होंने तनिक सा भी अन्तर नहीं आने दिया। जैसा कि आप जानते हैं पिछले दिनों वहाब आदम साहब का निधन हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इस सिलसिले के सेवक की सेवा का समय आधी शताब्दी से अधिक समय पर फैला हुआ है। उनकी सेवाएं तथा अनका व्यक्तित्व और उनकी कर्मठता तथा उनकी श्रद्धा की घटनाओं को इस संक्षिप्त समय में बयान नहीं किया जा सकता है। अतः कुछ बातें मैं आपके सम्मुख रखता हूँ जिससे उनके व्यक्तित्व की कुछ बातें स्पष्ट होती हैं। पहली तो यह कि उनके परिवार में अहमदिय्यत उनके वालिद एंव वालिदा के द्वारा आई थी। उनके बेटे वहाब साहब ने बताया कि वहाब आदम साहब पैदायशी अहमदी थे तथा उनके पिता सुलेमान के आदम (K.Adam) साहब तथा वालिदा आइशा अकुा वोरो साहिबा Ayesha Akauaworo ने अहमदिय्यत क़बूल की थी। वहाब साहब बरोफ़ई एडूर Brofoye Dru गाँव में जो अशांटी रीजन के अडांसी Adansi ज़िले में है। दिसम्बर 1938 में पैदा हुए थे और आरंम्भिक शिक्षा उन्होंने यूनाइटिड मिडिल स्कूल से पाप्त की तथा अहमदिया सैकेंडो स्कूल कमासी में पढ़े। वहां से शिक्षा पूरी की अथवा कुछ समय तक जैसा भी है पढ़ते रहे फिर जीवन वक़्फ़ कर दिया और आपको 1952 में जामिअः अहमदिय्या रबवा में शिक्षा पाप्त करने के लिए भिजवा दिया गया।

1960 में जामिअः अहमदिय्या रबवा से शाहिद की डिगो पाप्त की, वापस घाना गए वहां आपकी विभिन्न स्थानों पर रीजिनल मिशनरी के रूप में नियुक्ति हुई। 1969 तक इस रीजन में जो पहली रीजन थी बरोंग आहाफ़ो Brong Ahafo वहां आपको सेवा का सुअवसर पदान हुआ। इसके बाद साल्ट पोन घाना में जामिअःतुल मुबश्शिरीन के पधान अध्यापक बने और समय यह हाल था मिशनों का कि छोटे छोटे मिट्टी के घर होते थे, स्नान घर कोई नहीं। चटाइयों को खड़ो करके चटाइयां और लकड़ी के डंडों पर स्नान घर बनाए जाते थे। अब तो ऐसा सोच भी नहीं सकते अफ़रीक़ा में। उन्होंने मुझे बताया कि एक बार स्नान घरों की यह दशा थी कि दो ईंटें रखकर बालटी पानी की कहीं से लाकर तो स्नान कर लिया करते थे। अत्यंत पारम्भिक स्थिति थी। अतः 1971 में वहाब साहब की नियुक्ति यू के में नायब इमाम मस्जिद फ़ज़्ल के रूप में लंदन में हुई। 1974 तक यह आपने यह दायित्व निभाया। 1975 में आपको अमीर व मिशनरी इंचार्ज घाना नियुक्त कर दिया गया आर लगभग 39 वर्ष निधन के समय तक यही सेवा करते रहे। जब ये रबवा में थे उस समय घाना के राजदूत एक अवसर पर यहां आए। उन्होंने इनको बताया कि रबवा कैसे आबाद हुआ कैसी बंजर धरती थी, किस पकार लोगों ने क़ुर्बानियां कीं। यह सारी व्याख्या इस पकार बयान की, कि वह राजदूत साहब कहने लगे कि यदि कोई व्यक्ति ख़ुदा पर विश्वास न करता हो और उसे अल्लाह तआला की वास्तविकता का ज्ञान न हो तो वह ये घटनाएं सुनकर निस्सन्देह ख़ुदा की हस्ती पर ईमान ले आएगा कि किस पकार रबवा आबाद हुआ। कोई भी अवसर तबलीग़ का जाने नहीं देते थे। अपनी घटना बताते हैं कि किस पकार उन्होंने रबवा में आरम्भिक ज़माना व्यतीत किया। कहते हैं बिजली भी नहीं होती थी उन दिनों में। पीने का पानी कोई नहीं था, दूर से लाना पड़ता था। कोई बिल्डिंग नहीं थी और हॉस्टल की छतें भी कच्ची थीं। फ़र्श भी कच्चा था बारिश होती तो छत टपकती थी फ़र्श पर पानी खड़ा हो जाता था। बल्कि मज़ाक़ में बताया करते थे कि हमारे जो सन्दूक़ थे वे भी पानी में तैरने लग जाते थे, तो यह स्थिति थी उस समय। फिर अहमद नगर में बिल्डिंग ली वहां जामिअः शुरु हुआ।

जामिअः अहमदिय्या रबवा में जब शिक्षा पाप्त कर रहे थे तो एक स्थान पर पहुंचकर कुछ विषयों में जैसे मन्तिक़ तथा फ़िक़्ह को उर्दू भाषा में समझने में कठिनाई हुई, परीक्षा सिर पर आ गई, बड़े परेशान थे। उनके दोस्त थे अमीर उबैदी साहब, उन्होंने भी जामिअः पढ़ा था उस समय में तंज़ानिया के। जो बाद में वहां के मन्त्री भी बने। उन्होंने सलाह दी कि मौलाना ग़ुलाम रसूल साहब राजेकी के पास जाकर दुआ के लिए कहते हैं। अतः ये उनके पास गए। हज़रत मौलाना राजेकी साहब कोई किताब पढ़ रहे थे। उनको देखकर उन्होंने किताब एक ओर रख दी और पूछा कि क्या समस्या है? अमरी उबैदी साहब ने कहा कि मैं तथा वहाब साहब दोनों की परीक्षाएं चल रही हैं और हमें बड़ी कठिनाई हो रही है, दुआ के लिए कहने आए हैं तो उन्होने कहा हाथ उठाइए दुआ के लिए। उन्होंने कहा कि तुम भी मेरे साथ दुआ में शामिल हो। दुआ के बाद हज़रत मौलाना राजकी साहब कहने लगे कि मैं ने दुआ करते हुए कश्फ़ी हालत में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र हाथ को आप दोनों के सिरों पर रखा हुआ देखा है जिसका फल मैं यह समझता हूँ कि अल्लाह तआला हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम को बरकत से आपको सफलता पदान करेगा। अतः कहते हैं कि ऐसा ही हुआ तथा चमत्कारी रूप से वह विद्या सरल हो गई, तैय्यारी आसान हो गई। जब परीक्षा हुई तो परचों को बहुत सरल पाया तथा परिणाम जब निकला तो वहाब आदम साहब अपनी कक्षा मं पहली पोज़ीशन पर थे।

कुछ अन्य वरदान उनके भागय में आए। सबसे पहले अफ़रीक़न मिशनरी वहाब साहब थे। सबसे पहले घानियन अमीर व मिशनरी इंचार्ज यह थे। सबसे पहले अफ़रीक़न अहमदी जिन्हें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के पतिनिधित्व में स्थानीय अमीर रबवा बनने का सौभागय पाप्त हुआ, वह यह थे। सबसे पहले अफ़रीक़न मिशनरी जिन्हें यूरोप में सेवा का अवसर मिल वह यह थे। फिर सबसे पहले अफ़रीक़न जिन्हें मज्लिस उफ़ता का अवैतनिक मेम्बर बनने का सौभागय पाप्त हुआ, वे वहाब साहब थे। उनको मर्कज़ के पतिनिधत्व में विभिन्न देशों जैसे कैनेडा, जर्मनी, बेनियन, माली, ऑयवरी कोस्ट, नाइजेरिया, बर्कीना फ़ासो, लाइबेरिया, सीरालियोन तथा जमैका के दौरों की तौफ़ीक़ मिली। इनको इसलाम तथा जाति व रंग भेद तथा इसलाम व इसाईयत के विषय पर निबंध लिखने का सौभागय मिला। उनकी वालिदा के नाम उन्होंने एक फ़ाउंडेशन भी जारी की है जो निर्बलों की सहायता करती है। अहमदिय्या जमाअत घाना ने इनके इमारत के समय में अल्लाह के फ़ज़्ल से बड़ी उन्नति की है। अल्लाह के फ़ज़्ल से कुछ तो स्कूल पहले से थे कुछ और खुले। कुछ स्टैब्लिश हुए नए सिरे से, उनमें नई पगति हुई। अहमदिय्या जमाअत के चार सौ से अधिक स्कूल हैं इसके अतिरिक्त टीचर टनिंग कालिज, जामिअतुल मुबश्शरोन, जामिअः अहमदिय्या इन्टर नैशनल पमुख हैं। इसी पकार सात बड़े हस्पताल हैं, दो होम्यो पैथिक क्लीनिक हैं जो सेवा कर रहे हैं घाना में। इसके अतिरिक्त समाज सेवा के कार्य जारी हैं। इलैक्टानिक तथा पिन्ट मीडिया में जमाअत को उच्च स्थान मिला है। घाना की दो मुख्य सड़कें जो हैं उनपर उन्होंने बड़ी कोशिश से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी बड़ी तसवीरें लगवाईं हैं आर उन्हें हर एक आने जाने वाला देखता है और नीचे लिखा हुआ है कि जिस मसीह के आने को पतीक्षा थी वह आ गया और वह ये हैं। इस पकार यह खुलकर वहां तबलीग़ भी कर रहे हैं। उनको जो संसारिक सम्मान मिले वे ये हैं कि कोरिया में इन्टर रिलीजस Inter religious तथा इन्टर नैशनल फ़ाउंडेशन फ़ार वर्ल्ड पीस अमेरिका को ओर से शांति के लिए महान तथा निस्सवार्थ सेवा के कारण एम्बैसडर फ़ार पीस Ambassador for peace का सम्मान दिया गया। इसी पकार घाना की सरकार की ओर से अमीर साहब घाना को इनकी शिक्षा विभाग, स्वास्थय, कृषि तथा देश में शांति व पबलता के पयासों को स्वीकार करते हुए देश के एक विशेष सम्मान Companion of the order of the volta से विभूषित किया गया। फिर 10 नवम्बर 2007 को आपके गुणों के एतराफ़ में देश की एक बड़ी यूनिवर्सिटी आफ़ कैप कोस्ट ने सम्मानित पी एच डी की डिगो पदान की।

ये हैं नेक नीयत से किए गए वक़्फ़ की बरकतें कि दीन की सेवा के साथ अल्लाह तआला ने उन्हें संसारिक सम्मान से भी विभूषित किया। यदि वक़्फ़

न होते तो पता नहीं कोई अन्य कार्य कर रहे होते और किसी को पता भी न होना था कि कौन हैं वहाब साहब। फिर इन्टर नैशनल रूप से उनके दायित्व निम्न लिखित हैं-

सैन्टर फ़ार डैमोक्रैटिक डवलोपमैन्ट घाना Center for democratic development (C D D) के मेम्बर थे। Integrity initiative Ghana के वाइस चैयर मैन थे। नैशनल पीस काउन्सल (Naional peace council) के मेम्बर थे और उसमें वहां की सरकारों में शांति के साथ सरकार चलाने में बड़ी भूमिका निभाई। को-फ़ाउंडर (Co-founer) एंड नैशनल अध्यक्ष फ़ार काउंसल आफ़ रिलीजन्स थे। इसमें विभिन्न देशों के लोगों का पतिनिधित्व था। नैशनल रिकौसिलेशन Naional reconciliation कमीशन के मेम्बर रह चुके थे जब ये यहां थे 1974 में जब पाकिस्तान में अहमदिय्या पर हालात बड़े भयानक हो गए थे अत्याचार हो रहे थे, जो परीक्षा का दौर था। वहाब साहब ने यहां इमाम मस्जिद फ़ज़्ल के साथ मिलकर दिन रात काम किया तथा निरन्तर कई कई रातें जागकर व्यतीत कीं तथा समाचारों को बर्तानिया पस तथा अन्य मीडिया तक पहुंचाया। 1973 में वहाब साहब को मुस्लिम हैराल्ड का नायब ऐडिटर नियुक्त किया गया। इस पत्रिका में उन्होंने दो नए कॉलम आरम्भ किए। एक लंदन डायरी के नाम से था जिसमें महीने की कार्यवाही रिपोर्ट पकाशित होती थी और दूसरा कॉलम Your question answer के नाम से था जिसमें विभिन्न लोगों के पाप्त होने वाले सवालों के युक्ति पूर्ण जवाब होते थे। इसके अतिरिक्त मरहूम ने लंदन मिशन के स्टडी सर्किल में कई निबन्ध परस्तुत किए जो विशेषतः नई पीढ़ी के सवालों के जवाब होते थे।

मरहूम अब्दुल वहाब साहब आदम बच्चों से बड़ा सुन्दर व्यवहार करते थे। सदा दूसरों को भी हर बच्चों को जब भी मिलते उनको भेंट में गुब्बारे, चाक्लेट उनकी जेब में होते थे, दिया करते थे। और बल्कि किसी ने मुझे शिकायत की कि उनका व्यवहार ऐसा है। इसपर मैं ने उन्हें कहा मुझे विश्वास तो नहीं, परन्तु उनको मैं ने भेज दिया है। इसपर उन्होंने कहा मैं तो सदा अपने पास से अपने ऊपर तंगी करके भी लोगों का ध्यान रखता हूँ। परन्तु फिर भी ऐसा समुदाय होता है जो शिकायतें करने पर तुला होता है चाहे उससे अच्छा व्यवहार भी किया जाए। इसी पकार ख़िलाफ़त के साथ सम्बंध तथा घनिष्टता के विषय में अथवा कोई काम पूछे बिना नहीं करना। डा0 तासीर साहब लिखते हैं कि वहाब साहब का एक गुण यह था कि आज्ञा पालन सदा करना है। कहते हैं ख़िलाफ़त राबिअः म एक बार यह घाना में डाक्टर होते थे एक ग़ैर अहमदी रेडियो गाफ़र की ओर से एक्सपरे प्लांट लगाने की योजना हुई जिसमें पकट रूप में हस्पताल को लाभ एंव सरलता दिखाई पड़ती थी। कहते हैं जब मैं ने वहाब साहब से पूछा तो कहने लगे कि कोई बात तय करने से पहले ख़लीफ़ः-ए-वक्त से जब तक स्वीकृति नहीं मिल जाती यह नहीं करनी। उनसे स्वीकृति लो फिर आगे बात चलाना। अतः जब स्वीकृति मांगी गई तो नहीं मिली। इस पकार बहुत सी कठिनाइयों से बच गए। हाफ़िज़ मशहूद साहब कहते हैं कि मैं ने एक बार कुछ वर्ष पहले मैं ने कहा था कि अफ़रीक़ा के लागों में यह मशहूर है कि अहमदी हज नहीं करते। और ग़ैर अहमदियों ने बड़ी अफ़वाहें फैलाई हुई हैं इस लिए हमारे मुबल्लिग़ों को हज करना चाहिए। इस लिए एक स्कीम आरम्भ की थी तो मशहूद साहब कहते हैं कि मैं ने वहाब साहब से कहा कि विभिन्न लोगों के आप नाम पेश करते हैं, आप स्वंय क्यूं नहीं जाते तो उन्होंने तुरन्त जवाब दिया इसका कि मैं पहले ही हाजी हूँ। कहते हैं मुझ इसकी समझ नहीं आई तो मेरी कठिनाई देखकर कहने लगे कि एक बार हज़रत ख़लीफ़ः सालिस के ज़माने में मैं ने हज पर जाने का निश्चय किया लेकिन उस समय घाना के धार्मिक मामलों के जो मन्त्री थे वे मुसलमान थे उन्होंने बड़ा विरोध जताया और मुझे वीज़ा नहीं लगने दिया। कुछ समय के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस से उनकी मुलाक़ात हुई तो हुज़ूर न फ़रमाया कि वीज़ा न मिलने के क्या कारण हैं? जब उन्होंने यह बताया कि वहाब साहब कुछ देर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस चुप रहे। उनको देखते रहे इसके बाद कहते हैं कि मुझे कश्फ़न अभी अल्लाह तआला ने दिखाय है कि तुम ख़ाना काबा का तवाफ़ कर रहे हो और तुम्हारे साथ साठ सत्तर हज़ार लोग परिकमा कर रहे हैं। तो कहते हैं इस लिए मैं तो पहले ही हाजी हूँ, ऑलरेडी हाजी हूँ। इस लिए मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

धैर्य एक बड़ी विशेषता थी उनकी। कहते हैं मस्तिष्क पर चित्रित है धैर्य की हालत कि जिस दिन उनके एक दामाद अमेरीकन, अमरीका में थे जो शहीद हो गए थ, वहां किसी ने डाका डाला और उनको उनकी जगह पर मार दिया तो कहते हैं उस दिन जामिअः अहमदिय्या घाना का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह था। पोगाम आने से पहले अमीर साहब को यह सूचना मिल गई थी ज़ाहिर है एक बाप की अनुसार बेटी विधवा हो गई है। चिंता होनी चाहिए, जवान बेटी तीन बच्चे परन्तु तीन चार घटे उस समारोह में शामिल रहे और चेहरे पर बिल्कुल भाव नहीं आने दिया कि यह घटना हो चुकी है और सारा समारोह बड़ी पसन्नता से व्यतीत किया और शाम के समय जब सब कुछ समाप्त हो गया फिर हमें बताया कि यह दुर्घटना हो गई है और मेरी बेटी जो है आज विधवा हो गई, जवान दामाद जो है उसको इस पकार मार दिया गया है। एक रशियन दोस्त क़ानात बेग साहब रशियन हैं वे कहत हैं कि 2008 में जलसा सालाना घाना में शामिल होने का अवसर मिला। मुझे अमीर साहब घाना की ओर से उनके घर दावत दी गई। अपने पारम्परिक लिबास में मुझे मिले। गले लगाया और इस पकार मिले कि मेरी यात्रा की पाँच दिनों की जो थकावट थी बिल्कुल दूर हो गई और कहते हैं अभी भी जब मैं तसवीर देखता हूँ तो उनके हाथों की गर्मी अनुभव करता हूँ मुझे आपकी यह अदा भी बड़ी पसन्द आई कि आपके साथ देश के राष्टपति कुर्सी पर बैठे थे तो आपने जो सम्मान राष्टपति जी को दिया वही सम्मान डयूटी वाले को दिया जो कि धूप से बचने वाली बडो छतरी लिए खड़ा था। आपने दोनों से एक ही अन्दाज़ में बारी बारी पूछा कि आप थक तो नहीं गए, आपको प्यास तो नहीं लगी अर्थात निर्धन एंव धनी दोनों को, उनको ध्यान रखा। रशियन डैस्क वाले ख़ालिद साहब कहते हैं कि जब मैं ने उनको बताया एक बार कि मैं रशिया से आया हूँ तो कहने लगे तुम बड़े भागयवान हो you are very lucky person कहते हैं मैंने हैरान होकर कहा, यह क्यूं कह रहे हैं आप, और आप के मुबल्लिग़ जो रशिया में काम कर रहे हैं बड़े भागय शाली हैं तो इस पर

कहने लगे कि एक नबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्य वाणी है कि वहां बड़ी संख्या में जमाअत फैल जाएगी और बड़ी उन्नति होगी आप लोग बड़े भागयवान हैं कि इसका अंश बन रहे हैं। अतः यह विश्वास था और इस यक़ीन पर इज़हार कि जिन मुबल्लिग़ों ने भी वहां क़दम रखे हैं उन्हें भी मुबारक हो कि वे आगे उसका अंश बनने वाले हैं इतिहास का। एक घटना और लतीफ़ा मुबारक सिद्दीक़ी साहब बयान करते हैं, कहते हैं वहाब आदम साहब यहां आए थे। मेरी टैक्सी पर एक दिन बैठे लंदन मस्जिद चलने के लिए कहा तो मैं तो उन्हें जानता था वे नहीं जानते थे मुझे, शरारत सूझी, अपनी आदत के अनुसार करते रहते हैं शरारत। कहते हैं कि मैं ने उनसे कहा कि आप इस मस्जिद में क्यूं जा रहे हैं वह तो अहमदियों की मस्जिद है। यह सुनते ही वहाब साहब कहने लगे। उन्होंने तबलीग़ शुरू कर दी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी के अनुसार मसीह मौऊद का आगमन हो चुका है और पूरे परीक्षण के बाद हमने उन्हें मान लिया है और तुम लोग बैठे हुए हो, स्वीकार नहीं कर रहे तो वहां मस्जिद फ़ज़्ल पहुंचकर बड़ी देर तक बैठे रहे, मुझे तबलीग़ करते रहे। कहते हैं मैं ने उस समय उनको मज़ाक़ में कहा, बड़ो गम्भीरता से कहा सुना है आपका कलिमा भी अलग है। इस पर उन्होंने कहा हमारा कलिमा **ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्दुर्रसूलुल्लाह** है। फिर मुझे बाज़ओं से पकड़ कर खींचने लगे कि अन्दर आओ तुम्हें दिखाता हूँ मस्जिद पर लिखा हुआ। इस पकार बड़ी देर के बाद मैं ने हाथ छुड़ाकर कहा कि मैं तो आपको जानता हूँ बल्कि आपका बड़ा पशंसक हूँ और अहमदी हूँ और हल्क़े का क़ायद भी हूँ। मैं मज़ाक़ कर रहा था। इस पकार इस बात पर बहुत हंसे।

जब मैं घाना में ही था तो मुझसे कई बार बड़े दुःख के साथ चर्चा की कि कुछ मुरब्बी जो हैं संघर्ष करते हैं तथा बड़ा परिश्रम करते हैं परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो बिल्कुल काम नहीं करते और जवाब दे देते हैं कि इससे अधिक काम नहीं हो सकता। जबकि तबलीग़ के नए से नए माध्यम खोलने चाहिएं और हमें सन्देश पहुंचाना चाहिए, और यह बात शत पतिशत उचित थी उनकी कि कुछ केवल यही समझते हैं कि जो तरीक़ा जारी हो गया है बस उसी पर चलते रहो तथा लकीर के फ़क़ीर बने रहो, नए नए रास्ते न निकालो। इस पकार वहाब साहब का यह पयास होता था कि हर स्थान पर अहमदिय्यत का पैग़ाम पहुंचे, सही इसलाम का पैग़ाम पहुंचे और इसके लिए स्वंय कोशिश भी करते थे। दूसरों से भी बड़ी आशा रखते थे और इसके लिए व्याकुल रहते थे, दुआएं करते थे। फिर लालच भी कोई नहीं जमाअत से, कार्यकर्ताओं को और पाकिस्तान में रबवा में कुछ प्लाट मिले थे, शुरू में मिला करते थे सस्ते दरों पर। वे अब पिछले साल उन्होंने मुझे लिखा शायद इस लिए कि यहां इलाज पर कहीं जमाअत का पैसा व्यय हो रहा है तो कम्पंशेट करने क लिए वह प्लाट जो है जिसकी लाखों रुपए में क़ीमत थी वह मैं जमाअत को देना चाहता हूँ और जमाअत को दे रहा हूँ। तो यह भी है कि कोई संसारिक लोभ भी नहीं था उनको इस पकार का। वह उन्होंने कम से कम 20-25 लाख की सम्पत्ति जमाअत को दी। उनका निधन भी बड़े सरकारी सम्मान के साथ हुआ और देश के राष्टपति ने वहां अपने स्टेट हाउस में उनका जनाज़ा मंगवाया, वहीं पढ़वाया, सरकारी पाटोकोल दिया। जनाज़ा ले जाने के लिए सरकार की ओर से पुलिस तथा फ़ौज तथा पैरा मिल्टो फ़ोर्सिज़ की गाड़ियों ने पूर्ण सम्मान दिया। फिर वहां पूरी कार्यवाही हुई और स्टेट हाउस में विभिन्न मन्त्रियों ने, राष्टपति ने, उप-राष्टपति ने उनके विषय में अपने विचार परस्तुत किए। राष्टपति के पतिनिधि ने जो स्पीकर आफ़ पार्लिमैन्ट थे और इसी पकार उप-राष्टपति भी थे वहां। पूरा पाटोकोल दिया गया, सम्मान के साथ उनको और फिर इसी पकार वहां के जो विभिन्न धार्मिक नेता थे ईसाइयों आदि ने वे भी उन्होंने उनके विषय में बहुत कुछ कहा। हमारे फ़रीद साहब जो मिशनरी जामिअः अहमदिय्या घाना के पधान अध्यापक हैं उन्होंने जीवन मृत्यु के जो है जीवन तथा मौत का जो दृष्टि कोण है इसलाम का वह बयान किया। क़ुरआन और हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अवतरणों के साथ।

अतः एक सम्पूर्ण सम्मान के साथ उनको वहां से ले जाया गया और मक़बरा मूसियान घाना में उनको दफ़नाया गया और मीडिया पर भी काफ़ी क्वरैज हुई। घाना टेलीवीज़न ने पूरी क्वरैज दी और स्टोमिंग पर दुनिया में भी दिखाई गई। उनके परिवार में उनकी बीवी मरयम वहाब साहिबा और चार बेटे तथा तीन बेटियां हैं और अल्लाह तआला उन सबको अपनी विशेष सुरक्षा में रखे और ख़िलाफ़त तथा जमाअत से दृढ़ सम्बंध रखे जैसा उनका अपना था और ये अपने बच्चों तथा बीवी के लिए चाहते थे। अल्लाह तआला धैर्य तथा साहस उनको अता फ़रमाए और वहाब साहब के दर्जे बुलन्द फ़रमाए और अपने प्यारों के निकट उनको स्थान पदान करे। (हिन्दी रूपान्तर- तनवीर मलिक आफ़ सहारनपुर)

KhulasaKhutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 27.06.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office MajlisAnsarullah Bharat,*
Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516
Via; Batala, Dist; Gurdaspur (PUNJAB)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा दिनांक 14-15-16 अक्तूबर 2014 दिन मंगल, बुद्ध, जुमेरात को क़ादियान दारुलअमान में आयोजित होगा।